व्यंग्यायन

डॉ. रमेशचंद्र खरे

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-7408-427-9

अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030
दूरभाष : 2664 5812
e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com

•

मूल्य : 150.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2010 © डॉ. रमेशचंद्र खरे

VYANGYAYAN (Satirical Poetry)
by Dr. Ramesh Chand Khare

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

1.	व्यंग्य की अवधारणा	15
2.	व्यंग्य का मनोविज्ञान	34
3.	व्यंग्य का परिदृश्य	52
4.	व्यंग्य के 'चरित्र'	72
5.	व्यंग्य की विकास-यात्रा	95

Scanned with OKEN Scanner

'व्यंग्यायन' एक प्रयोग

डॉ. रमेशचंद्र खरे साहित्य की विविध विधाओं में लेखन करते हैं और उनको मिले पुरस्कार/सम्मान सिद्ध करते हैं कि काव्य, व्यंग्य, समीक्षा, एकांकी, शिक्षा आदि क्षेत्रों में उनके योगदान को महत्वपूर्ण रूप में रेखांकित करने वाले सिद्ध साहित्यप्रेमियों की एक पूरी शृंखला है। ये उनके विविधमुखी लेखकीय व्यक्तित्व का ही परिणाम है कि उन्होंने काव्य एवं आलोचना के मिश्रण से हिंदी व्यंग्य-आलोचना में एक प्रयोग किया है। 'व्यंग्यायन' शीर्षक से किए गए इस प्रयोग के लक्ष्य एवं आवश्यकता के संबंध में वे कहते हैं- "अपनी तीन व्यंग्य और तीन काव्य कृतियों के बाद अपने आप व्यंग्य-सी इच्छा जगी कि क्यों न एक की आत्मा दूसरे में प्रवेश करे और एक तीसरा जातक व्यंग्यावतार ले, याने व्यंग्य का काव्यात्मक अनुशीलन- व्यंग्य की अवधारणा से लेकर उसके मनोविज्ञान, परिदृश्य, चरित्र और विकास यात्रा की छंदोमय सृष्टि। यह भी मित्रों की दृष्टि में व्यंग्य-व्यथा-सी प्रतीत हुई। यह कोई शोधकार्य तो था नहीं पर काव्य कलेवर के लिए आवश्यक विषय वस्तु ही उसका सार्थक अंग विन्यास बनती। उसकी सामग्री अपने सम्यक् अध्ययन के साथ एक 'व्यंग्य पुरुष' को एक अशरीरी नायक की तरह गढ़ने में कहां तक सफल रही? पांच सर्गों का यह खंडकाव्य कहां तक अखंड रहा? या 'बृहत्-काव्य' - एक वृहत्तर काव्य विस्तार।'

इस पुस्तक के बारे में कुछ कहने से पूर्व मैं आरंभ में स्वीकार कर लेना चाहता हूं कि कविता के संदर्भ में मेरी मति थोरी है और इस कारण बातें भी थोरी ही करूंगा।

डॉ. रमेशचंद्र खरे ने एक प्रयोग किया है और प्रयोग या तो सफल होते हैं या असफल। अब यह प्रयोग सफल हुआ या असफल, इसका विश्लेषण

Scanned with OKEN Scanner

योग्य आलोचक ही करेंगे, मुझे तो भूमिका लिखनी है और भूमिका लेखक से ऐसी अपेक्षाएं नहीं की जाती हैं कि वो किसी कृति की चीर-फाड़ ही कर दे। प्रयोग करने के लिए अतिरिक्त साहस की आवश्यकता होती है और साहस दिखाने के लिए रमेशचंद्र खरे बधाई के पात्र हैं। 'व्यंग्यायन' के माध्यम से उन्होंने व्यंग्य को विभिन्न आयामों के व्यापक धरातल पर न केवल प्रस्तुत किया है अपितु उसे खंडकाव्य का रचनात्मक रूप भी दिया है। बड़ी बात है कि उन्होंने बड़ी ईमानदारी के साथ व्यंग्य के प्रति न केवल अपनी दृष्टि को ही साफ किया है अपितु अपने अग्रज एवं समकालीन व्यंग्यकारों के प्रति काव्यात्मक टिप्पणियां भी की हैं और ये टिप्पणियां रमेशचंद्र खरे की दृष्टि में एक निष्पक्ष मूल्यांकन को प्रस्तुत करती हैं। ये दीगर बात है कि इन विचारणीय में कुछ महत्वपूर्ण नाम छुट गए हैं। उन्होंने व्यंग्य के आदर्श रूप को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। इस प्रस्तुति में व्यंग्य का महिमागान अतिरेक का स्वर भी ग्रहण कर लेता है।

'व्यंग्यायन' के लेखन में 'व्यंग्य-यात्रा' ने भी भूमिका निभाई है, यह जानकर अच्छा लगा कि पत्रिका व्यंग्य प्रेमियों को व्यंग्य-आलोचना की ओर प्रेरित कर रही है। 'व्यंग्य का मनोविज्ञान' जैसे विषय को उठाकर रमेशचंद्र खरे ने व्यंग्य-आलोचना में बहुत घिस गए विषयों से अलग कुछ सोचा है।

रमेशचंद्र खरे की यह कृति हिंदी-व्यंग्य के एक अलग चेहरे को प्रस्तुत तो करती ही है और इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

- प्रेम जनमेजय
संपादक, व्यंग्य यात्रा
नई दिल्ली

Scanned with OKEN Scanner

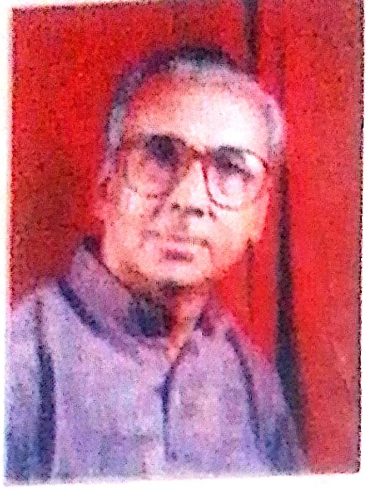

डॉ. रमेशचंद्र खरे

नाम : डॉ. रमेशचंद्र खरे आत्मज स्व. श्री विष्णु स्वरूप खरे

जन्म : 19 जुलाई 1937, होशंगाबाद मा. शिक्षा क्षेत्र-गाडरवारा (म.प्र.)

योग्यता : एम.ए. (हिन्दी, इतिहास), पीएच.डी., साहित्य रत्न, डिप.टी.

शोध प्रबंध : अम्बिका प्रसाद दिव्य, व्यक्तित्व और कृतित्व (सागर विश्वविद्यालय)

प्रकाशन : ◆विरागी-अनुरागी (महाकाव्य), तुलसी अकादमी भोपाल के सहयोग से (1996), द्वितीय संस्करण 2007 ◆अधबीच में लटके (व्यंग्य) 2002 ◆संवेदनाओं के सोपान (काव्य) 2005 ◆आओ गाएँ शाला में पढ़ते-पढ़ते (बालगीत) 2006 ◆आओ सीखें मैदानों में गाते-गाते (बालगीत)006, कहानियाँ बुद्धि और विवेक की (नवसाक्षर) 2007 ◆प्रकृति से पहचान (ज्ञान विज्ञान) 2007, ◆शेष कुशल है (व्यंग्य) 2007 ◆मेरे भरोसे मत रहना (व्यंग्य) 2008, ◆संभावनाओं के आयाम (काव्य) 2009

प्रसारण : आकाशवाणी और दूरदर्शन से लगभग 64 प्रसारण।

सम्मान (शिक्षा) : ◆एस.पी.लाल. मेमोरियल अवार्ड 1986 ◆राष्ट्रीय पुरस्कार 1989 एवं मध्यप्रदेश शिक्षा मंडल द्वारा प्रशस्ति। **(साहित्य)** ◆पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार 1996, म.प्र. साहित्य परिषद ◆म.प्र. तुलसी पंचशती समारोह सम्मान 1997 ◆भाषा-भूषण 1998, अ.भा. दिव्य नर्मदा अलंकरण अभियान, जबलपुर ◆महीयसी महादेवी वर्मा सृजन सम्मान 2002, त्रिवेणी संगम, जबलपुर ◆दिव्य रजत अलंकरण 2003 एवं 2007 जबलपुर-बेलगाम कर्नाटक में ◆हिन्दी भूषण 2003, अ.भा. साहित्य सम्मेलन, गाज़ियाबाद (उ.प्र.) ◆भक्ति काव्य कलाधर (सम्मानोपाधि) 2004, शिव संकल्प साहित्य परिषद, होशंगाबाद ◆विद्यावाचस्पति 2004, साहित्यिक, सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, परियावां, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) ◆तुलसी सम्मान 2004, म.प्र. तुलसी साहित्य अकादमी, भोपाल ◆राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान 2004, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गाजियाबाद (उ.प्र,) ◆हिन्दी सेवी सम्मान 2005, जैमिनी अकादमी, पानीपत ◆बाबा दीपसिंह स्मृति सम्मान 2005, विंध्यवासिनी ज़नकल्याण ट्रस्ट, नई दिल्ली ◆भारती भूषण 2006, राष्ट्रीय राजभाषा पीठ, इलाहाबाद ◆हिन्दी सेवी सम्मान 2006, राष्ट्रीय हिन्दी सेवी महासंघ, इन्दौर ◆सारस्वत सम्मान 2006, म.प्र. लेखक संघ, भोपाल ◆काव्य कल्पतरु 2007, अ.भा. साहित्य संगम, उदयपुर ◆डॉ. चन्द्रप्रकाश वर्मा स्मृति पुरस्कार 2007, अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल ◆राजेन्द्र सम्मान 2007, दमोह ◆शाश्वतामृत सम्मान, हि.सा.स. प्रयाग 2008 ◆सारस्वत सम्मानएवं साहित्य-मनीषी सम्मान 2010 ◆डॉ. हरिहरशरण मिश्र पुरस्कार 2008 'कादम्बरी' जबलपुर ◆कबीर सम्मान 2009, ◆अ.भा.हि.सा.स. गाजियाबाद 'साहित्यश्री सम्मान' 2010 अ.भा. भाषा साहित्य सम्मान, भोपाल

संस्थागत : ◆अध्यक्ष म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, दमोह एवं सदस्य प्रादेशिक व्यवस्थापिका सभा, अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन भोपाल ◆जिला संयोजक - राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास, गाज़ियाबाद, योग प्रशिक्षक - पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार

सम्प्रति : डॉ. रमेशचंद्र खरे,
'श्यामायन', एम.आई.जी. बी-73 विवेकानंद नगर,
दमोह-470661 (म.प्र.)

फोन : (07812) 221928 मो. - 9893340604

Scanned with OKEN Scanner